2) Language & communication Skills-2019-2024

हिंदी भाषा और संचार कौशल (Language & communication Skills):

1. स्पष्टता और प्रभावशीलता: विद्यार्थी सीखते हैं कि कैसे स्पष्ट और प्रभावी ढंग से अपने विचारों को व्यक्त करें।
2. व्याकरण और वर्तनी की समझ: विद्यार्थी हिंदी व्याकरण और वर्तनी की मूल बातें सीखते हैं।
3. शब्दावली और अर्थ की समझ: विद्यार्थी नए शब्दों का अर्थ और उपयोग सीखते हैं।
4. वाक्य रचना और शैली की समझ: विद्यार्थी वाक्य रचना और शैली की मूल बातें सीखते हैं।
5. सक्रिय सुनना और प्रतिक्रिया: विद्यार्थी ध्यान से सुनें और प्रतिक्रिया देने की कला सिखते हैं।
6. नॉन-वर्बलसंचार की समझ: विद्यार्थी नॉन-वर्बल संचार की मूल बातें सीखते हैं।
7. आत्मविश्वास और प्रभावशीलता: विद्यार्थी अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में आत्मविश्वास महसूस करते हैं।
8. संवाद कौशल: विद्यार्थी सीखते हैं कि कैसे प्रभावी ढंग से संवाद करें।
9. समूह कार्य औरसहयोग: विद्यार्थीयों में समूह कार्य करने और सहयोग करने की कला का विकास होता हैं ।
10. प्रस्तुति कौशल: विद्यार्थी भाषण, लेखन, वाचन काव्य लेखन, कथालेखन, आदि प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

PRINCIPAL
Government of Maharashtra's
Ismail Yusuf College of
Arts, Science & Commerce,
Jogeshwari (East), Mumbai - 400 060

MAJoshi
Dr.(Smt.) Madhuri Anil Joshi
Head Of Dept, (Hindi)
Government of Maharashtra
Ismail Yusuf College, Jogeshwari, Mumbai-60.

हिंदी भाषा और संचार कौशल outcome

हिंदी भाषा में प्रभावी ढंग से संवाद करने, समझने और व्यक्त करने की क्षमता:

1. लेखन कौशल: हिंदी में स्पष्ट और प्रभावी ढंग से लिखने की क्षमता।
2. बोलने की क्षमता: हिंदी में स्पष्ट और प्रभावी ढंग से बोलने की क्षमता।
3. पढ़ने की क्षमता: हिंदी में समझने और व्याख्या करने की क्षमता।
4. सुनने की क्षमता: हिंदी में ध्यान से सुनने और समझने की क्षमता।
5. संचार कौशल: हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद करने, समझने और व्यक्त करने की क्षमता।

- स्पष्टता और प्रभावशीलता
- व्याकरण और वर्तनी की समझ
- शब्दावली और अर्थ की समझ
- वाक्य रचना और शैली की समझ
- सक्रिय सुनना और प्रतिक्रिया
- नॉन-वर्बल संचार की समझ

हिंदी भाषा और संचार कौशल का महत्व है क्योंकि यह हमें प्रभावी ढंग से संवाद करने, अपने विचारों को व्यक्त करने और दूसरों को समझने में मदद करता है।

PRINCIPAL
Government of Maharashtra's
Ismail Yusuf College of
Arts, Science & Commerce,
Jogeshwari (East), Mumbai - 400 060

MAJoshi
Dr.(Smt.) Madhuri Anil Joshi
Head Of Dept, (Hindi)
Government of Maharashtra
Ismail Yusuf College, Jogeshwari, Mumbai-60.

दिनांक: २३-०१-२१

गतिविधि का नाम-निबंध प्रतियोगिता

१)वि.नाम: अनामिका यादव (तृतीयवर्षकला)कार्यक्रम का स्थान-भवन्स महाविद्यालय

भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरुप

जब तक संस्कृति है तब तक आस है

बिना संस्कृति मानवता का विनाश है।

संस्कृति जीवन जीने की एक पद्धति है जिससे समाज के सदस्यों में साझेपन का भाव विकसित होता है।वे वेश-भूषा, आचार-विचार, उत्सव, भाषा, कला इत्यादि मिलकर संस्कृति का निर्माण करते हैं। यह एक गतिशील धारणा है, जो पीढ़ियों के माध्यम से आगे बढ़ती है। इनमें स्थान और समय के आधार पर भिन्नता पाई जाती है।

अगर भारत के संदर्भ में बात की जाए तो भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है, एक तथ्य कि यहाँ यह बात इसके लोगों, संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती हैं। हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सुखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठार की ठंडक तक, भारतीय जीवनशैलियाँ इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। एक भारतीय के परिधान, योजना और आदतें इसके उद्भव के स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग -अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग -अलग भोजन करते हैं किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता हैं। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पुरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या आयोजन किसी घर या परिवार के लिए सिमित नहीं हैं। पूरा समुदाय या आस -पड़ोस एक अवसर पर खुशियाँ मनाने में शामिल होता है, इसी प्रकार एक भारतीय विवाह मेल-जोल का आयोजन है, जिसमें न केवल वर और वधु बल्कि दो परिवारों का भी संगम होता हैं। चाहे उनकी संस्कृति या फिर धर्म का अलग क्यों न हो। इसी प्रकार दुख में भी पड़ोसी और मित्र उस दर्द को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति के बारे में पं. मदनमोहन मालवीय का कहना है कि "भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात 'वसुधैव कुटुम्बकम' की पवित्र भावना में निहित है।"

भारत का इतिहास और संस्कृति गतिशील है और यह मानव सभ्यता की शुरुआत तक जाती है। यह सिंधु घाटी की रहस्यमयी संस्कृति से शुरू होती है और भारत के दक्षिणी इलाकों में किसान समुदाय तक जाती है। भारत के इतिहास में भारत के आस-पास स्थित अनेक संस्कृतियों से लोगों का निरंतर समेकन होता रहा है।

उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार लोहे, तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग काफी शुरुआती समय में भी भारतीय उप-महाद्वीप में प्रचलित था, जो दुनिया के इस हिस्से द्वारा की गई प्रगति का संकेत हैं। चौथी सहस्त्राब्दि बी.सी. के अंत तक भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के क्षेत्र के रूप में उभर चुका था।

संस्कृति के शाब्दिक अर्थ की बात की जाए तो संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश , जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारो का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों , जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है-संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट अदि। वर्तमान समय में सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पर्याय माना जाने लगा है लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती है। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रोद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतम उपलब्धियाँ सम्मिलित है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमे बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के ढालती भी आई हैं।

"यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां, सब गिर गए जहाँ से अब तक मगर हैं बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा,

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर -ऐ -जहाँ हमारा।"

जब से मानव का जीवन अस्तित्व में है तब से वह निरंतर उन मूल्यों की तरफ अग्रसर है, जिनके प्राप्त कर लेने पर उसका जीवन व्यवस्थित होने के साथ- साथ 'आत्मिक सौंदर्य' से भी परिचित हो सके। उसकी यह प्रवृत्ति वास्तव में संस्कृति की ओर ही इशारा करती है। भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है।

PRINCIPAL
Government of Maharashtra's
Ismail Yusuf College of
Arts, Science & Commerce,
Jogeshwari (East), Mumbai-400 060

म संस्कृत का और ही इशारा करता है। भारतीय संस्कृत समस्त मानव जात का कल्याण चाहता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है, जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी, तिब्बत मंगोल, द्रविड़, हड़प्पाई और यूरोपीय धाराएं समाहित हैं। भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुषीय संस्कृति या गंगा-जमुनी तहज़ीब में परिवर्तित करती हैं।

अगर भारतीय संस्कृति के समन्वित रूप पर विचार करे तो इसमें विभिन्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में अध्यात्म एवं भौतिकता'में समन्वय नजर आता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल में मनुष्य के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं चार आश्रमों-ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का उल्लेख है, जो आध्यात्मिकता एवं भौतिक पक्ष में समन्वय करने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति ने अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचारों को अपने में समेट लिया है। भारतीय संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हुण, यूनानी एवं कुषाण भी यहाँ की संस्कृति में घुल-मिल गए हैं। अरबों, तुर्कों और मुगलों के माध्यम से यहाँ इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा और नवागत संस्कृतियों की अच्छी बातों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया।

आज हम भाषा, खानपान, पहनावे, कला, संगीत अदि हर तरह से गंगा -जमुनी तहजीब या यूँ कहे कि वैश्विक संस्कृति नमूने हैं कौन कहेगा कि सलवार-सूट ईरानी पहनावा है या हलवा ,कबाब ,पराठे, शुद्ध भारतीय व्यंजन नहीं हैं। इस बिंदु पर विचार करना जरुरी है कि हड़प्पाकालीन सभ्यता की परंपराएँ एवं प्रथाए आज भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिल जाती है,यथा-मातृदेवी, पशुपतिनाथ की उपासना, योग-आसन की परंपरा इत्यादि।इसके अलावा भारतीय संस्कृति में 'प्रकृति मानव सहसंबंध' पर बल दिया गया है। हमारी संस्कृति मानव ,प्रकृति और

पर्यावरण के अटूट एवं साहचर्य संबंधों को लेकर चलती है। भारतीय उपनिषदों में 'ईशावास्यइंद सर्वम' अर्थात जगत के कण -कण में ईश्वर की व्याप्तता को स्वीकार किया गया है।

यहाँ के विभिन्न विचारकों एवं महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को समन्वित रूप प्रदान करने वाले विचार प्रस्तुत किये हैं। फिर चाहे बुद्ध, तुलसीदास हो या गांधी जी, इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा ये सभी चरित्र संस्कृति को समन्वित स्वरुप देते है। भारत की विभिन्न कलाओं, जैसे मूर्तिकला, नृत्यकला, चित्रकला, लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरुप को देखा जा सकता है। विभिन्न धर्म, पंथों एवं वर्गों के लोगो का नेतृत्व इन कलाओं में दृष्टिगोचर होता है, भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप केवल भौगोलिक -राजनितिक सीमाओं में नहीं है बल्कि उसके बाहर भी है। भारत के अंदर बौद्ध, जैन, हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के लोग एवं उनके पूज्य-स्थल हैं, जो 'शांतिपूर्ण' सहअस्तित्व को दर्शाते हैं। विदित हो कि संस्कृति का स्वरूप 'साहित्य' में सबसे अधिक समर्थपूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य का प्राण है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। यहाँ की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करुणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृति भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है।

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रामाणिक व आधारभूत खोज की। शून्य का अविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल पर सटीक विवरण आदि का आधार भारत में ही तैयार हुआ। तात्कालिक कुछ नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी सांस्कृतिक जीवन-शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानी पूर्वक हटाना होगा। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें।

संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है

अतः यह स्पष्ट रूप से उल्लेखनीय है कि भारत में कभी भी एक ही संस्कृति पूर्ण रूप से व्याप्त नहीं रही और न ही शायद किसी भी बड़े प्रदेश में कभी एक ही संस्कृति रही है। इस देश में आध्यात्मिक संस्कृति की प्रमुखता रही है। अतः संस्कृति में बदलाव निरंतर रहेगा।

यादव अनामिका राजेश

तृतीय वर्ष कला हिंदी २०२०-२१

PRINCIPAL
Government of Maharashtra's
Ismail Yusuf College of
Arts, Science & Commerce,
Jogeshwari (East), Mumbai - 400 060

MAJoshi
Dr.(Smt.) Madhuri Anil Joshi
Head Of Dept, (Hindi)
Government of Maharashtra
Ismail Yusuf College, Jogeshwari, Mumbai-60.